Page 1 B.ed 1st year
Paper-C2
Unit-3

पाश्चात्य चिंतकों के शैक्षिक विचार

* प्लेटो *

प्लेटो का जीवन परिचय :-

पाश्चात्य शिक्षा के इतिहास में प्लेटो का महत्वपूर्ण स्थान है। प्लेटो महान यूनानी दार्शनिक थे। प्लेटो का जन्म 427 ई० पूर्व में एथेन्स के एक कुलीन परिवार में हुआ था। उनके पिता अरिस्टोन एथेन्स के अंतिम राजा कोड्रस के वंशज थे। माता पेरिक्तिओन यूनान के सोलन घराने से थी। प्लेटो का वास्तविक नाम अरिस्तोक्लीज था, उनके अच्छे स्वास्थ्य के कारण उनके व्यायाम शिक्षक ने इसका नाम प्लाटोन रख दिया।

प्लेटो 18 या 20 वर्ष की आयु में सुकरात की ओर आकर्षित हुए। यद्यपि प्लेटो एवं सुकरात में कुछ विभिन्नताएँ थी लेकिन सुकरात की शिक्षाओं ने इसे अधिक आकर्षित किया। तभी से प्लेटो सुकरात का शिष्य बन गये। उनका दार्शनिक चिंतन सुकरात के अध्यात्मवादी दर्शन से प्रभावित था। वे यूनान के पहले दार्शनिक थे, जिन्होंने अपने दार्शनिक चिंतन को बड़े व्यवस्थित एवं तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। प्लेटो आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते थे और मानते थे कि परमात्मा ही सृष्टि का नियामक कारण अर्थात निर्माणकर्ता है।

और विचार इसके उपादान अर्थात आधार है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि यह भौतिक जगत विचारों की जगत का प्रतीकरण है।

प्लेटो की प्रमुख रचनाएँ :-

प्लेटो ने अपने दार्शनिक विचार उत्पन्न करने के लिए विभिन्न रचनाएँ की थी जो निम्नलिखित है :-

i) The Republic (रिपब्लिक)
ii) The Laws (लॉज)
iii) The Statesman (स्टेट्समैन)

प्लेटो का शिक्षा दर्शन

प्लेटो के शैक्षिक विचार The Republic, The Laws नामक पुस्तक में मिलते है। प्लेटो का मानना है कि इस ब्रह्माण्ड को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :-

i) विचार जगत
ii) वस्तु जगत

इसी को आधार मानकर उन्होंने समाज का विभाजन तीन वर्गों में किया है :-

i) दार्शनिक :- जिसके पास ज्ञान का गुण होता है।
ii) सैनिक :- जो साहस और युद्ध कला में पूर्ण रखते है।
iii) मजदूर :- जो उत्पादन व श्रम करते है।

प्लेटो के अनुसार शिक्षा का अर्थ —

प्लेटो के अनुसार शिक्षा का अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति में सद्गुणों का विकास करना है। ये सद्गुण प्रमुख रूप से चार है :

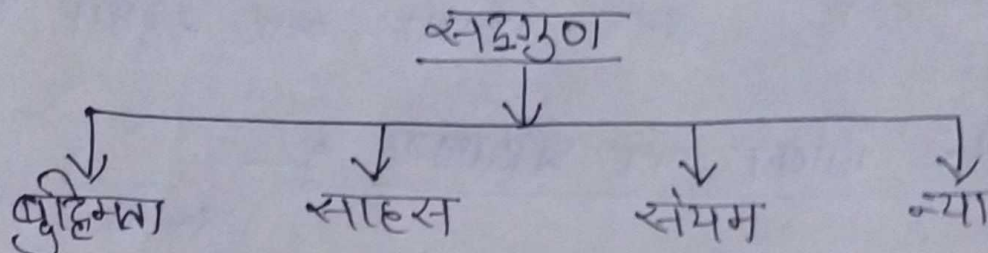

प्लेटो के मतानुसार संयम और साहस का विकास अभ्यास से होता है तथा ये दोनों गुण आदतजन्य है। प्रारम्भिक जीवन के आधार पर बाद में बुद्धि तत्व पर बुद्धिमता और न्याय के सद्गुण आधारित है।

शिक्षा के उद्देश्य

प्लेटो ने The Republic में आदर्श राज्य की कल्पना की तथा व्यक्ति को आत्मानुभूति आदर्श पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। वह चाहते थे कि राज्य में शांति एवं व्यवस्था स्थापित हो जिसके लिए उन्होंने शिक्षा को ही प्रबल साधन समझा तथा शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताएँ :—

1) **ईश्वर को जानना** — शिक्षा का दायित्व है कि बालक को इस योग्य बनाए कि वह ईश्वर के साथ आत्म साक्षात्कार कर सके।

2. प्लेटो यह मानते है कि जो सत्य है वही अच्छा (शिव) है और जो अच्छा है वही सुन्दर है। सत्य, शिव एवं सुन्दर ऐसे ~~शाश्वत~~ शाश्वत मूल्य है जिसे प्राप्त करने का प्रयास आदर्शवादी लगातार करते रहते है प्लेटो ने इसे शिक्षा का उद्देश्य माना है।

3. नैतिक जीवन का प्रशिक्षण :— इसके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है कि व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वे आत्मा के स्वरूप का ज्ञान कर सके। यह तभी संभव है जब बालक को गुणों की शिक्षा दी जाये।

4. आदर्श व्यक्तित्व का विकास :— आदर्श व्यक्तित्व वह है जिसमें व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का समुचित विकास हो। अतः ज्ञान, साहस, धैर्य, न्याय, प्रेम इन सभी गुणों का विकास ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

5. राज्य की एकता की रक्षा करना :— प्लेटो ने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि शिक्षा का उद्देश्य राज्य की एकता की रक्षा करना है।

6. विवेक जाग्रत करना :— विवेक ही सामाजिक व्यवस्था की नींव है। प्लेटो ने सद्गुणों में विवेक को सर्वोपरि स्थान दिया है।

विवेक द्वारा बालक अपने जीवन पर नियंत्रण रख सकता है। अतः विवेक को जाग्रत करना भी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम (curriculum)

पाश्चात्य शिक्षा के इतिहास में प्लेटो ही प्रथम व्यक्ति था जिसने पाठ्यक्रम पर कुछ व्यवस्थित विचार प्रकट किए। प्लेटो के शिक्षाक्रम में कसरत, नृत्य तथा खेल-कूद का बड़ा ऊँचा स्थान था।

पाठ्यक्रम के विषय – पाठ्यक्रम के विषय निम्न है

प्राथमिक स्तर पर – अंकगणित, रेखागणित, संगीत व नक्षत्र विद्या पर विशेष बल दिया है।

माध्यमिक स्तर पर –
कविता, गणित, सैनिक प्रशिक्षण, शिष्टाचार, संगीत व धर्मशास्त्र की शिक्षा।

उच्च शिक्षा स्तर पर –
डायलेक्टिक विषय को सर्वोच्च स्थान दिया है।
दर्शन, नीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, अध्यात्म शास्त्र, प्रशासन, कानूनी शिक्षा इन सबको सम्मिलित कर प्लेटो ने डायलेक्टिक का नाम दिया है।

शिक्षण-विधि (Teaching method)

प्लेटो के अनुसार शिक्षण विधि शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप ही होनी चाहिए ज्ञान की खोज शिक्षा का उद्देश्य है। यह कार्य तर्क द्वारा विचारशील व्यक्ति ही कर सकते हैं अतः सर्वप्रथम प्लेटो ने शिक्षण विधि के लिए तर्कविधि का प्रयोग किया इसके अतिरिक्त प्लेटो ने प्रश्नोत्तर विधि को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया।

विद्यालय (School)

सुकरात की भाँति प्लेटो गलियों व चौराहों पर वार्तालाप द्वारा शिक्षा देने के विरुद्ध थे। उन्होंने शिक्षा एक नियमित स्थान पर देने की पहल की। यह स्थान विद्यालय था। प्लेटो के अनुसार - "स्कूल एक ऐसा स्थान है जहाँ उचित ढंग से मनुष्य का विकास होता है।"

उन्होंने स्वयं भी एक विद्यालय की स्थापना की जो 'एकेडमी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, प्लेटो ने जिन विद्यालयों की कल्पना की वो इस प्रकार है -

1. शिशु विद्यालय
2. नर्सरी विद्यालय
3. प्रारम्भिक विद्यालय
4. वाद्य संगीत विद्यालय
5. सैनिक विद्यालय
6. वैज्ञानिक विद्यालय
7. जिमनास्टिक विद्यालय
8. डाइलेक्टिक शिक्षा के विद्यालय।

उपयुक्त सभी विद्यालय राज्य द्वारा संचालित होंगे।

स्त्रियों के लिए शिक्षा
(Education of Women)

प्लेटो के अनुसार — "पुरुषों के लिए उपयुक्त सभी उद्यम स्त्रियों के लिए उपयुक्त हैं, किन्तु उन सभी में स्त्री, पुरुष की अपेक्षा कम क्षमता रखती है।" अतः स्त्री पुरुष की शिक्षा समान होनी चाहिए, स्त्रियाँ भी शासक वर्ग तक पहुँच सकती है। उन्हें गृहस्थी के दायरे में बाँधकर रखना प्लेटो उचित नहीं समझते थे। उनका कहना था कि उनकी मूलभूत शक्तियों तथा गुणों में कोई अन्तर नहीं होता। अतः स्त्री-पुरुषों की शिक्षा में कोई अन्तर नहीं रखना चाहिए।

अनुशासन (Discipline)

प्लेटो का पूर्ण विश्वास था कि कड़े नियंत्रण व अनुशासन जीवन में ही सद्गुणों का विकास होता है वे बालक की स्वतंत्रता को ~~संयम की~~ संशय की दृष्टि से देखते थे। प्लेटो दण्डात्मक अनुशासन के समर्थक थे।

विशेषताएँ

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएँ निम्नलिखित है।

(i) शिक्षा प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

(ii) बालक व बालिकाओं की सह शिक्षा को प्लेटो पक्षधर है।

(iii) सुव्यवस्थित शिक्षा योजना
(iv) व्यापक पाठ्यक्रम
(v) शिक्षा राज्य का उत्तरदायित्व
(vi) स्त्रियों के लिए समान शिक्षा की व्यवस्था।
(vii) जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के लिए अलग-2 शिक्षा की व्यवस्था।
(viii) शिक्षा का आदर्शवादी दृष्टिकोण।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि प्लेटो एक महान दार्शनिक थे। शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान आजभी प्रासंगिक है। डीवी ने ठीक ही कहा है - "आधुनिक दर्शन पद्धति के लिए प्लेटो के पृष्ठ-पोषण से अधिक हितकर और एक नहीं हो सकता।" इस तरह प्लेटो ने केवल अपने युग का महान दार्शनिक व शिक्षाविद् था बल्कि उसने आने वाली सदियों में सभी दार्शनिकों व शिक्षाशास्त्रियों को प्रभावित किया।